सुधांशु 'शेखर' चौधरी

जन्म : 3 नवम्बर 1920 ई० ।

जन्म-स्थान : मिश्रटोला, दरभंगा ।

मृत्यु : 28 मार्च, 1990 ई०।

कृति : **मैथिली : नाटक** : 'भफाइत चाहक जिनगी', 'लेटाइत आँचर', 'पहिल साँझ', 'लगक दूरी', 'हथटुट्टा कुरसी' (एकांकी संग्रह)

उपन्यास : 'तऽर पट्टा : उपर पट्टा', 'दरिद्र छिम्मरि', 'ई बतहा संसार', 'निवेदिता', 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी', 'हस्ताक्षर' (शीघ्र प्रकाश्य)।

निबंध : 'सन्दर्भ'

कविता : गजल ओ गीत

एकर अतिरिक्त छद्मनामसँ (यथा-पराशर, कामरूप) कथा, कविता, निबंध आदि सैकड़ो रचना पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित ।

हिन्दी : नाटक : 'तमाशा', नाटक, 'निकम्मा', 'कर्ज की मार', परिवार, 'मैं भी इन्सान हूँ।'

उपन्यास : 'महाकवि पगलेट'

कथा : जयमाला, फिल्म की दुनियाँ

कविता : पथ पर, फूल और कलियाँ

पुरस्कार : 1980 ई० मे **'ई बतहा संसार'** (उपन्यास) पर साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत ।

पत्रिकाक सम्पादन– 'वैदेही', 'इजोत', 'मिथिला मिहिर' (साप्ताहिक)

नाटक, उपन्यास, कथा, एकांकी, रेडियो-नाटक, निबन्ध, कविता, आलोचना आदि साहित्यक विविध विधाक रचना करबामे समर्थ प्रांजल गद्यक शिल्पी 'शेखर' जी मैथिलीक प्रतिष्ठित पत्रकारितासँ एक दीर्घ अन्तराल धरि जुड़ल रहलाह । उपन्यास पर पुरस्कृत होइतहुँ समालोचक लोकनि हिनकामे नाटककारक प्रतिभाकेँ प्रबल मानैत छथि ।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत 'हथटुट्टा कुरसी' एकांकीमे गृहस्थ पुत्र ओ उच्च पदासीन पुत्रक प्रति केहन भिन्न व्यवहार होइत अछि तकर मनोविश्लेषण बड़ मार्मिक ढंगसँ कयल गेल अछि।

हथटुट्टा कुरसी

पात्रः नेनमणि, कंटीर, डाकपीन

[स्थान– निम्न मध्यवित्त गृहस्थक एकटा घर। घर दुमुहाँ अछि, सोझाँक देबालमे एकटा चौकठि-केबाड़ लागल अछि जाहि दऽ कऽ लोक आँगन दिस जाइत अछि। दोसर चौकठि-केबाड़क दहिन भाग देबालमे अछि, जाहि बाटेँ लोक बाहरसँ अबैत अछि। घरक जे स्थिति अछि ताहिसँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे कोनो खास व्यक्तिक रहबाक हेतु ई आइए खाली कराओल गेल अछि। एकटा चौकी मात्र राखल छैक, सेहो उचित स्थानपर नहि। देबालक झोलझाल एखनो विद्यमान अछि जे सफैयाक बाट जोहि रहल अछि। समय प्रायः दिनक नओ बजैत होयतैक। पर्दा उठबैत आङनक दिससँ आश्रमक मुखिया नेनमणि बाबू हहायल-फुहायल अबैत छथि आ चौकीकेँ यथास्थान नहि देखि पहिने एकसरे ओकरा घसकयबाक चेष्टा करैत छथि, मुदा पार नहि लगैत छनि। दू-तीन बेर चेष्टा कयलाक बादो जखन असफल रहैत छथि तँ डाँड़मे बान्हल गमछाकेँ फोलि अर-दर बजैत पसेना पोछैत छथि आ एमहर-ओमहर ताकि हाक लगबैत छथि।]

नेनमणिः गेनमा ! रौ गेनमा! (कनेक थमि) अभगला, गेलेँ कतऽ? (एतबेमे हुनक जेठ बालक, जकर वयस वर्ष तीसेक होयतैक, हथटुट्टा कुरसी लेने प्रवेश करैत अछि) ई की उठा कऽ लऽ अनलह कंटीर ? हरेकेँ ई नीक लगतनि?

कंटीर : (कुरसीकेँ रखैत) नहिएँ नीक लगतनि तँ हम की करबनि । गाममे जेहने वस्तु रहतैक तेहने लऽ कऽ ने लोक काज चलाओत ?

नेनमणि : (कुरसी दिस बढ़ैत) हौ, बोचबाबू तोरा ठकि लेलथुन। जे से दऽ कऽ टारि देलथुन। अपन कमौआ अबैत छनि तँ कोना निकहा कुरसी बाहर करैत छथि।

कंटीर : नीक वस्तु आनेकेँ दऽ देतैक तँ लोककेँ अपना लेल की रहतैक? मङनी आखिर मङनिये होइत छैक।

नेनमणि : (तमसाइत जकाँ) हम खूब बुझैत छिअहु ! कोँढ़ दरकैत छहु तोहर।

कंटीर : (लोहछल सन) बाबू, अनेरे अहाँ किदन कहाँदन सोचि लैत छी। हमरा जे कोँढ़ फटैत तँ अन्हरोखेसँ एतेक अपस्याँत नहि रहितहुँ। दू बेकती रहताह आ ताहि लेल घरक सभ वस्तु जहाँ-तहाँ फेकल गेल। कतेक मेहनतिसँ ढंगाबाली कोठी बनौने छलि से एहि उनटफेरमे भसकि गेल। कोठीक काज-प्रयोजन तँ आखिर हमरे लोकनिकेँ होइत अछि ने।

नेनमणि : हँ हौ कंटीर, कोठी फूटि गेलहु तँ बड़का जमा चल गेलहु। हम आइए कहैत छिऐक गेनमाक मायकेँ जे पाड़ि देतहु कोठी। मुदा एतबा धरि सदिकाल मोन राखह जे हरेक परतर तोँ कहियो नहि पयबह । एह, बेटा हो तँ एहन! हाकिम-हुक्काम बनि गेल, मुदा गौरवक नाम-गाम नहि। तोँ ओकरासँ जरैत किएक छहक, हौ ?

कंटीर : फेर अहाँ वैह कथा दोहरौलहुँ । बाबू, हमरा हरेसँ जरनी किएक होयत? हमही जरबैक तँ आर सुड्डाह होयतैक जरि-जरि। हम तँ यैह कहय चाहैत छी जे हमरा लोकनि जे छी से हरेकेँ बुझले छैक, घरमे जे वस्तु-जात छैक से ओकर देखले छैक, तखन एतेक आहे-माहेक प्रयोजने कोन ?

नेनमणि : हौ, तोँ नहि बुझैत छहक। बेटा हो वा भातिज, हाकिम आखिर हाकिमे होइत छैक । हाकिमकेँ तँ कने लटक-चटक चाहबे करी। ओहि बेचारा जोगर तँ हमरा घरमे किछु अछिए नहि। मुदा जतबा कऽ सकैत छी ताहि लेल जी किएक चोरायब।

कंटीर : जँ सत्य पूछी बाबू, तँ हमरा मङनी-चङनी नीक नहि लगैत अछि। अहीँ कहैत छी तेँ दरबज्जे-दरबज्जे बौआ अबैत छी। हमर बस चलैत तँ घूरि कऽ ककरो दरबज्जाक मुह नहि देखितिऐक । एह! कतेक कहलियनि बोवबाबूकेँ निकहा कुरसी दिअऽ, मुदा ओ अन्त धरि हमरा फुसियबैत रहलाह। कहलनि जे यैह कुरसी छैक।

नेनमणि : आरौ तोरीकेँ ! काल्हिए हम देखने रहिऐक ओहि कुरसीकेँ पालिससँ चम-चम करैत रहैक। रातिये भरिमे बीझ लागि गेलनि ? जाय दहक । कंटीर, जे अनका लेल मलेच्छ बनैत अछि से जिनगी भरि मलेच्छे बनल रहि जाइत अछि।

कंटीर : की करितहुँ। मोन मारि कऽ अहाँक डरेँ यैह उठा अनलहुँ। ने तँ सोझैमे तेना कऽ पटकि दितियनि जे हाथ तँ टूटले छनि, टाङो टूटि जइतनि।

नेनमणि : अनके जकाँ नहि सोची, बाबू ! जे देलथुन से बहुत देलथुन। हरे अपन काज एहीसँ चला लेताह।

कंटीर : काज तँ बिनु कुरसियोक चलि जयतैक। एतबा दिन हरे कोन कुरसी-सोफा पर बैसलाह। गाममे जे पढ़लनि-लिखलनि से हमरा लोकनि देखबे कयलियनि। दरभंगाक सेहो देखिए आयल छियनि। तखन रहल पटना, तँ से ओतऽ कोना की कयलनि से टा हमरा बूझल नहि अछि।

नेनमणि : हौ, तोँ भागलपुर भऽ आयल रहितह तँ एना नहि बजितह। अपन हरे इन्द्रासनक सुख भोगि रहल अछि ओतऽ । हम जे पहिले-पहिल ओकर बासामे पैसलहुँ तँ चकबिदोर लागि गेल। दूध-सन उज्जर धप-धप डेढ़हत्थी एतेकटा बत्ती जरैत, ठीक ओहने जेहन कि दरभंगा टीसनमे लगा देलकैक अछि आ नीचा घरमे कुरसी सब रहैक से की कहिअहु। गद्दी सब ओकर तेहन कोमल जेना नेनु पर बैसि रहल होइ। हौ, हमरा तँ होइत अछि, हरे पूर्व जनमक चूकिसँ हमर बेटा भऽ कऽ आयल अछि, ने तँ कहाँ हम, कहाँ ओ।

कंटीर : से तँ ठीके। हम नहि पढ़लहुँ-लिखलहुँ, तँ हरे-कोदारिमे लागल रहलहुँ, ओ पढ़ि गेल तँ हाकिम बनि गेल।

नेनमणि : सब अपन-अपन भाग लऽ कऽ अबैत अछि। आ' तोरे कथीक दुख छह। मेहनति करैत छह, अपन पालन करैत छह। जिनगीक दोसर प्रयोजने कोन?

कंटीर : (उतरल मुँहसँ) बाबू, तँ एहि कुरसीकेँ की करिऐक ?

नेनमणि : करबहक की, राखि दहक। नहि, कने झाड़ि-पोछि कऽ तेलपनियाँ चढ़ा दहक। जैह कनेक चमचमा जयतैक । (कंटीरक जयबाक हेतु उद्यत भेलापर) थम्हह, कनेक हमरा चौकी धरओने जाह (धरबैत छनि)।

कंटीर : बाबू, एकटा चौकी आर चाही किने ? अपनबला बाहर कऽ दिऐक ?

नेनमणि : चाही तँ अवस्से मुदा तोँ अपनबला कथी लेल बहार करबह । मायकेँ कहुन, वैह दऽ देथिन । बूढ़ि-सूढ़ि लोक कतहु पटियेपर पड़ि रहतीह । (एकाएक) हौ, गेनमा कतऽ गेल ? पहर भरिसँ ताकि रहल छिऐक, निपत्ता भेल अछि।

कंटीर : अपने तँ नथुनी बाबूक ओहिठाम चद्दरि लेल पठौने रहिऐक।

नेनमणि : बेस मोन पाड़लह, चद्दरिए लाबऽ गेल अछि। हमरो घर महादेवेक घर भेल अछि। जकर बेटा डिप्टी कलक्टर तकरा घरमे एकटा बढ़ियाँ चद्दरियो नहि। जाय दहक, जखन हरे गाम आबिए रहल छथि तँ अपने आँखिए सब किछु देखि लेताह।

कंटीर : आबि जयताह तखने बूझब जे आबि गेलाह।

नेनमणि : हौ, आन बेर हम बजबैत रहियनि तँ लिखथि जे चेष्टा करब आ एहि बेर तँ ओ अपनहि लिखलनि अछि। एहि बेर अवश्ये अओताह । (एकाएक बाहरक केबाड़ दिसि ताकि) के गेनमा?

डाकपीन : (नेपथ्यसँ) नहि हम छी निरसू ।

नेनमणि : (सशंकित होइत आगाँ बढ़ि) निरसू ? आबह, एम्हरे चलि आबह । ई घर एखन पुरुखाहे भऽ गेल अछि।

डाकपीन : (प्रवेश कऽ कऽ) घर एकदम चिक्कन-चुनमुन देखैत छी। की बात थिकैक?

नेनमणि : हौ, तोँही चिट्ठी दऽ गेलाह आ तोरहि नहि बूझल छह ? आइ हरे आबि रहल छथि । जे क्षण ने पहुँचल छथि।

डाकपीन : तखन तँ मधुर खयबे करब हम, एतेक दिन पर अओताह। आब अहाँ सभक दिन अवश्ये घूरत।

नेनमणि : से की कहैत छह ? हमर दिन अधलाहे कहिया रहल? ओम्हर अपन हरे कमाइत खाइत छथि, एम्हर कंटीर अपन आश्रम चलबैत छथि। हमरा चाहबे की करी ?

डाकपीन : से तँ ठीके (हाथसँ चिट्ठी दैत) लियऽ अपन चिट्ठी। (जयबाक उपक्रम) हरेबाबू आबथि तँ हमरो खबरि देब।

नेनमणि : (सोचमे पड़ि) चिट्ठी ? थम्हह, कने तोँही पढ़ि दैह। कंटीर पढ़बे ने करताह आ हमरा चश्मा ताकऽ पड़त।

डाकपीन : (चिट्ठी पढ़ैत) बाबूकेँ सादर प्रणाम । हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ। एकटा संगी पकड़ि लेलक। सपरिवार काश्मीर जा रहल छी। घुरब तँ फेर चिट्ठी देब।

नेनमणि : (काठ जकाँ होइत) काश्मीर ! निरसू, ई काश्मीर कतऽ छैक ? एहि गामसँ की ओ सुन्नर स्थान छैक ?

डाकपीन : सुनैत छिऐक जे काश्मीर धरतीक स्वर्ग थिकैक।

नेनमणि : बेस कहलह। ओ स्वर्गे होइतैक। हमर हरे एहि गामक, एहि घरक नहि, ओ ओही जोगक लोक अछि। हमरा लोकनि तँ कीड़ा-मकोड़ा छी। एतहि रहब, एतहि सड़ब-गलब। ओ हाकीम अछि, कमौआ अछि। हमरा लोकनि साल भरि जोतब-कोड़ब तँ कोठी नहि भरत आ ओ तँ अपन कमाइसँ टका लऽ कऽ

बखारी भरत(आँखिमे नोर भरि अबैत छनि)।

कंटीर : बाबू, हम जनिते रही। ओ भला आब एहि देहातमे की करय अओताह।

नेनमणि : (जोरसँ निसाँस लैत) तोँ एखन नेना छह। बापक हृदय केहन होइ छैक, की बुझबह । कतेक जतनसँ हम गाछ रोपलहुँ, मुदा फुलाय-फड़क बेरमे...। जाय दैह, हरे कतहु रहथु, सुखी रहथु।

डाकपीन : हँ, नेनमणि बाबू, सन्तानेक सुख लऽ कऽ माय-बापकेँ सुख। मुह मलिन नहि करी। जँ हरेबाबू जिबैत रहलाह तँ कहियो मोन अवश्ये बदलतनि।

नेनमणि : अधलाह कथा नहि बाजह निरसू । ओ जीताह किएक नहि ? हम अपना जनैत आइ धरि कोनो पाप नहि कयलहुँ तखन हुनक अनिष्ट किएक होयतनि ? कतहु रहथु, दनदनाइत रहथु ।

कंटीर : (बात बदलि) बाबू, तँ ई कुरसी बोचबाबूकेँ दऽ अबियनि ?

नेनमणि : अवश्ये दऽ अबहुन। राखथु अपन हथटुट्टा कुरसी, ओ हरेकेँ बुझि की लेलथिन ? ओ मामूली लोक नहि छथि, डिप्टी कलक्टर छथि। कहि दिअहुन्ह, हमर हरे एहन अभागल नहि छथि जे हुनक हथटुट्टा कुरसी पर बैसताह।

[कंटीर कुरसी लऽ कऽ जाइत अछि। पाछाँ-पाछाँ मुसकी भरैत डाकपीन चल जाइत अछि। नेनमणि हताश भावे चौकीपर बैसि रहैत छथि। हाथ माथ पर चलि जाइत छनि। पर्दा खसैत अछि।]

●

शब्दार्थ : मलेच्छ = नीच; लटकं - चटक = चमक-दमक; हहायल-फुहायल = धड़फड़ायल, कोढ़-दरकब = छाती फाटब ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. बोचबाबू के छलाह ?
2. नेनमणि किएक अपस्याँत छलाह ?

3. भागलपुरमे के इन्द्रासनक सुख भोगि रहल छलाह ?

4. नेनमणिकेँ पत्र द्वारा की खबरि अयलनि जे उदास भऽ गेलाह ?

5. हथटुट्टा कुरसीक विशेषता लिखू।

6. एहि एकांकीक केन्द्रीय भावकेँ स्पष्ट करू।

7. गृहस्थ पुत्रसँ बेसी कमौआ पुत्रकेँ किएक बेसी महत्त्व देल जाइछ ?

गतिविधि :

1. समाजमे पढ़ल-लिखल लोकक की कर्त्तव्य होयबाक चाही तकर विमर्श वर्गमे करू।

2. नेनमणिक चरित्र-चित्रण करू।

3. एहि एकांकीक रूपान्तरण कथामे करू।

4. पद, प्रतिष्ठा ओ समृद्धि प्राप्त भऽ गेने लोक अपन माता-पिता, मातृभाषा ओ ग्रामीण परिवेशक प्रति अपेक्षाकृत उदासीन भऽ जाइत छथि। ई प्रवृत्ति सराहनीय कहल जायत ? विवेचना करू।

निर्देश :

(क) छात्रकेँ अभिभावक अथवा माता-पिताक ओहि संवेदनासँ परिचित कराओल जाय जे कतेक संघर्ष ओ कतेक अभिलाषासँ अपन पालितकेँ पढ़बैत छथि। पुत्र-पुत्रीक सुयोग्य बनि गेलाक उपरान्त हुनक उचित कर्त्तव्य दिस छात्रकेँ प्रेरित कयल जयबाक चाही।

(ख) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत छनि जे ओ अपन विवेकसँ पढ़ल-लिखल लोकक समाजक प्रति की दायित्व होयबाक चाही तकर विवेचना वर्गमे करथि।

(ग) "आइ गामसँ प्रतिभा ओ श्रम-दुनूक पलायन भऽ रहल अछि। एहिसँ सम्बद्ध सज्जनक व्यक्तिगत विकास तँ भऽ रहल छनि मुदा हुनक जन्मस्थलक विकास हुनक वाट तकैत रहि जाइत छनि"- एहि कथनसँ अहाँ सहमत छी अथवा नहि ? अपन विचारसँ छात्रक ज्ञान-विस्तार करू।

□